International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(3): 335-342

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(3): 335-342
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 12-03-2022
Accepted: 19-04-2022

दीपशिखा
शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
दीपशिखा
शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

वाल्मीकि रामायण में यौगिक पद : एक विमर्श

दीपशिखा

सारांश: महर्षि वाल्मीकि प्रणीत रामायण संस्कृत लौकिक साहित्य का आदि-महाकाव्य है। साहित्यिक विकास तथा भाषा के स्वरूप को समझने के लिए श्रीमद्वाल्मीकिरामायण का व्याकरणात्मक अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है। संस्कृत वाङ्मय में अर्थावबोध का महत्त्व सर्वप्रधान है, अर्थ के ज्ञानाभाव में हम किसी भी पद अथवा वाक्य का सूक्ष्मतया अध्ययन करने में सक्षम नहीं हो सकते। अर्थबोध के ज्ञान की दृष्टि से शब्द को चार भागों में विभक्त किया गया है- यौगिक, रूढ, योगरूढ़ व यौगिकरूढ। जो शब्द 'यथा नाम तथा गुण' को प्रदर्शित करते हैं, वे यौगिक शब्द कहलाते हैं। इस शोधलेख में वाल्मीकि रामायण के प्रमुख यौगिक पदों का व्युत्पत्तिपरक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

कूट शब्द: श्रीमद्वाल्मीकिरामायण, रामायण, वाल्मीकि, यौगिक पद, राम, रावण, शब्द- अर्थ संबंध

प्रस्तावना:

महर्षि वाल्मीकि प्रणीत रामायण लौकिक संस्कृत का आदि काव्य है। वैदिक कविता के पश्चात् लौकिक संस्कृत कविता का प्रारम्भ इसी काव्य से माना जाता है। भारतीय जनमानस में इसका महत्त्व न केवल साहित्यिक दृष्टि से अपितु धार्मिक, राजनैतिक और सामाजिक दृष्टि से भी बहुत है। वैदिक वाङ्मय के पश्चात् भारतीय जन-जीवन को सच्चे अर्थों में भारतीयता से अनुप्राणित करने वाली वाल्मीकि रामायण परवर्ती लौकिक संस्कृत साहित्य के लिए एक उपजीव्य महाकाव्य है। अवान्तरकालीन कवियों ने इस मर्मस्पर्शी काव्य से स्फूर्ति तथा प्रेरणा ग्रहण करके साहित्य की विभिन्न विधाओं को विविधरंगी काव्य पुष्पों से अलङ्कृत किया है। भारतीय धर्म में प्राण तथा जनमानस में कर्म, आदर्श एवं धर्म की समन्वित त्रिवेणी प्रवाहित कर देने वाली 'रामायण' को लौकिक संस्कृत साहित्य का आदिकाव्य कहा जाता है तथा इसके रचयिता महर्षि वाल्मीकि आदिकवि के रूप में समादृत हैं। भारत के सांस्कृतिक निर्माताओं की रत्नत्रयी (वाल्मीकि, व्यास, कालिदास) में उनका स्थान प्रथम है। हमारे राष्ट्र की एकता, अखण्डता और मानवीय आदर्शों की उच्चतम प्रतिष्ठा के सम्पादन का सर्वप्रथम श्रेय वाल्मीकि को ही प्राप्त है। उन्होंने कला और जीवन का तथा नैतिकता और सुन्दरता का अनुपम समन्वय स्थापित करते हुए वैदिक धर्म के अनेक आवृत तथ्यों का हमें साक्षात्कार कराया है। वस्तुतः वाल्मीकि भारतीय संस्कृति के प्रकाश स्तम्भ में दीपशिखा है।

भारतीय साहित्य में रामायण एक ऐसी रचना है, जो भारत की प्रत्येक भाषा में किसी न किसी रूप में उपलब्ध है। रामायण कथा का प्रभाव आज भी भारतीय जन-मानस के हृदय पर अक्षुण्ण है क्योंकि रामायण जीवन के मूल्यों का बोध कराने वाला महाकाव्य है। यह धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक, पारिवारिक तथा व्यावहारिक सभी पक्षों का प्रस्तवन करता है। यह जीवन के वास्तविक तथ्यों के साथ-साथ मानवीय धार्मिक प्रवृत्तियों को भी उभारता है। रामायण में कहा है कि राम-कथा का पठन एवं श्रवण दोनों ही पुण्य देने वाले हैं –

इदं पवित्रं पापघ्नं पुण्यं वेदैश्च सम्मितम्।
यः पठेत् रामचरितं सर्वपापैः प्रमुच्यते॥ [i]

आदिकवि ने प्राचीन आर्यों के साहसिक एवं गौरवशाली जीवन को एक अनूठी संगीतमय, छन्दोबद्ध एवं संवेदनशील भाषा शैली में चित्रित किया है, जो सरस एवं सहृदय संवेद्य है।

भाषा मनुष्य के सामाजिक व्यवहार का अन्यतम माध्यम है, इसके अभाव में सामाजिक व्यवहार असम्भव है और यदि सम्भव है तो भी उस सफलता एवं सूक्ष्मता से निष्पन्न नहीं हो सकता जितना की भाषा के माध्यम से होता है क्योंकि मानव-मानस के अन्धकार को दूर करने वाली सर्वोत्तम ज्योति भाषा ही है। शब्द-व्यापार रूप इस भाषा का स्वरूप इतना अगाध और व्यापक है कि आचार्यों ने इसे ब्रह्म रूप माना है। जिस प्रकार ब्रह्म के विराट् रूप में समस्त चराचर जगत् समाविष्ट रहता है, उसी प्रकार मनुष्य का चराचर विषयक सकल ज्ञान-विज्ञान शब्दब्रह्म अर्थात् भाषा में समाविष्ट रहता है। भाषा के इस महत्त्व को ध्यान में रखते हुए ही हमारे आचार्यों ने इसके साधु प्रयोग पर बल दिया है। भाषा के साधुत्व को ऐहिक और पारलौकिक कामनाओं का साधक माना गया है -

एकः शब्दः सम्यग्ज्ञातः सुप्रयुक्तः स्वर्गे लोके च कामधुग्भवति। [ii]

मानव अपनी भावाभिव्यक्ति के लिए जब भाषा का प्रयोग करता है, तब वह अपने भावों को वाक्यों में प्रकट करता है। वाक्य पद के समूह से बना होता है - 'पदसमूहो वाक्यम्' तथा वर्णसमूह पद है- वर्णसमुदायः पदम्'[iii]। अतएव भाषा की अर्थवत्ता को अच्छी प्रकार से समझने के लिए पदों का समुचित ज्ञान आवश्यक है। पद ज्ञान को ही पदार्थ- ज्ञान का द्वार बताते हुए विश्वनाथ पञ्चानन ने न्यायसिद्धान्त मुक्तावली में कहा है–

पदज्ञानन्तु करणं द्वारन्तत्र पदार्थधीः।
शाब्दबोधः फलन्तत्र शक्तिधीः सहकारिणी॥ [iv]

वैयाकरणों का मत है कि 'अपदं न प्रयुञ्जीत' अर्थात् अपद का प्रयोग न करें। शब्दों का वाक्य में प्रयोग करने से पूर्व उसे पद बनाना आवश्यक है। यह 'पद' नाम भारतीय भाषा शास्त्र के इतिहास में अतिप्राचीन है। वेदों में भी इसका प्रयोग बहुलता से हुआ है। "चत्वारि वाक् परिमिता पदानि" में इन पदों की स्पष्ट चर्चा आई है। यास्क के निरुक्त से पूर्व निश्चित ही 'पद' की स्थिति व तत्सम्बन्धी अन्य धारणाएँ स्थिर रूप ग्रहण कर चुकी थी। 'पद प्रकृतिः संहिता' तथा 'पदप्रकृतीनिसर्वचरणानां पार्षदानि' में पद का प्रयोग निश्चित रूप से उसी अर्थ में हुआ है, जिस अर्थ में उसका प्रयोग पाणिनि ने किया है। 'पद' शब्द का पर्यायवाची नहीं है, अपितु वह वाक् शब्द की प्रायोगिक स्थिति का द्योतक है।

संस्कृत में पदों को भिन्न-भिन्न आधारों पर कई प्रकार का माना गया है। शाब्दबोध के आFयास्कधार पर पदों को वाचक, लक्षक एवं व्यञ्जक इन तीन भागों में विभक्त किया जाता है। किसी वस्तु या भाव की अभिव्यक्ति के लिए वक्ता शब्दों का प्रयोग करता है। वक्ता द्वारा अभीष्ट अर्थ की प्रतीति श्रोता को वक्ता के शब्दों द्वारा होती है। किसी शब्द से उसके द्वारा बोध्य अर्थ का ज्ञान शाब्दबोध कहलाता है। शाब्दबोध की दृष्टि से वक्ता को अभीष्ट अर्थ का ज्ञान कभी अभिधा शक्ति के द्वारा कभी लक्षणा शक्ति के द्वारा और कभी व्यञ्जना शक्ति के द्वारा होता है। इसके आधार पर पदों को भी तीन वर्गों में रखा जाता है जिन्हें क्रमशः वाचक, लक्षक तथा व्यञ्जक कहते हैं -

शब्दोऽपि वाचकस्तदवल्लक्षको व्यञ्जकस्तथा। [v]

वैयाकरण शब्द के प्रायोगिक रूप को पद का नाम देते हैं किन्तु उनमें पदों की संख्या के विषय में मतैक्य नहीं है। इसमें प्राचीन आचार्यों के तीन पक्ष प्रमुख हैं- द्विधापक्ष चतुर्धापक्ष एवं पञ्चधापक्ष[vi]। इनमें से प्रथम पक्ष केवल नाम और आख्यात को ही पद मानता है, द्वितीय पक्ष नाम, आख्यात, उपसर्ग एवं निपात के रूप में पदों की चार प्रकार की स्थिति स्वीकार करता है। प्रथम मत में उपसर्ग और

निपातों का अन्तर्भाव नाम और आख्यात के अन्तर्गत कर लिया जाता है किन्तु इस मत में इनकी पृथक् सत्ता स्वीकार की जाती है क्योंकि अर्थ की दृष्टि से ये नाम और आख्यात दोनों से सर्वथा भिन्न अर्थ की प्रतीति कराते हैं अर्थात् नाम और आख्यात वाचक हैं तथा उपसर्ग और निपात दोनों द्योतक है। इसके अतिरिक्त एकमत अन्य भी है, जो इन उपर्युक्त चार पदों के अतिरिक्त कर्म-प्रवचनीयों को पृथक् रूप से एक पद-विभाग स्वीकार करता है।
व्युत्पत्ति आधारित अर्थबोध की दृष्टि से पदों को चार वर्गों में विभक्त किया गया है- यौगिक रूढ, योगरूढ एवं यौगिक रूढ[vii]। संस्कृत वाङ्मय में प्राचीन काल से ही अर्थ की महत्ता रही है। आचार्य यास्क ने कहा है कि जिस प्रकार अग्नि के अभाव में शुष्क ईंधन प्रज्वलित नहीं हो सकता उसी प्रकार अर्थ की उपेक्षा कर उच्चरित हुआ शब्द कभी भी अभीप्सित विषय को प्रकाशित नहीं कर सकता है[viii]। नव्य वैयाकरणकार भर्तृहरि ने तो अर्थ को इतना अधिक महत्त्व दिया है कि भाषा में उसे ही प्रमुख मानकर अपने विवेचन में अर्थ को साध्य तथा शब्द को साधन रूप में चित्रित किया है। अपने वाक्यपदीय के प्रारम्भ में ही वे अर्थ को शब्द रूप ब्रह्म का विवर्त प्रतिपादित करते हैं-

अनादिनिधनं ब्रह्म शब्दतत्त्वं यदक्षरम्।
विवर्ततेऽर्थ भावेन प्रक्रिया जगतो यतः॥ [ix]

इस प्रकार स्पष्ट है कि शब्द का सारा महत्त्व उसके अर्थ के कारण ही है। अर्थ की इसी महत्ता के कारण अर्थबोध की दृष्टि से पदों को चार वर्गों में विभाजित किया गया है।

- **यौगिक संज्ञापद विचार -**

जिन शब्दों का बोध उनके अवयवों के द्वारा होता है उन्हें यौगिक कहते हैं। कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनके अर्थ का ज्ञान उनके प्रकृति-प्रत्यय के आधार पर प्राप्त होता है जैसे-पाठक, गायक, पाचक, दाता इत्यादि। वाल्मीकि रामायण में अनेक ऐसे पद प्राप्त हैं, जिनका अर्थ उनकी व्युत्पत्ति से जाना जा सकता है। उदाहरणार्थ 'कौशाम्बी' पद है, यह पद कुशाम्ब शब्द से 'अण्'[x] एवं 'ङीप्' प्रत्ययोपरान्त निष्पन्न हुआ है, वाल्मीकि रामायण में यह एक नगर का नाम है। इस नगर की स्थापना राजा कुशाम्ब ने की थी- कुशाम्बस्तु महातेजाः कौशाम्बीमकरोत्। अर्थात् राजा कुशाम्ब ने इसका निर्माण करवाया इसलिए यह नगरी 'कौशाम्बी' कहलाई। यह एक यौगिक पद है, जिसका अर्थ उसके प्रकृति एवं प्रत्यय के आधार पर स्पष्ट हो रहा है वाल्मीकि रामायण में प्राप्त अन्य यौगिक पदों का वर्णन इस प्रकार है –

- **अकोप:** 'न कुप्यति यः' अर्थात् जो कभी क्रोध न करता हो अर्थात् सुशील एवं संयमी के लिए 'अकोप' पद का प्रयोग हुआ है[xi]। यह एक यौगिक पद है महाराज दशरथ के अष्टप्रधानों में से एक मन्त्री का नाम अकोप था[xii]।

- **अगस्त्य:** 'विन्ध्याख्यम् अगम् अस्यति इति अगस्त्य'[xiii] 'अगं विन्ध्याचलं स्त्यायति स्तन्भनाति इति अगस्त्य'[xiv] इन दोनों निर्वचनों का अर्थ है- जो विन्ध्य नामक पर्वत को झुकाता है (निम्न करता है) वह अगस्त्य है। वाल्मीकि रामायण में यह एक ऋषि का नाम है।

- **अग्नि:** 'अङ्ग उर्ध्वं गच्छति' अङ्गयति अग्र जन्म प्रापयन्ति अग्रणीर्भवति इति अग्नि, अग्र यज्ञेषु प्रणीयते, इन निर्वचनों से स्पष्ट है कि अग्नि एक यौगिक पद है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार अग्नि देवता ने नील नामक वानर को उत्पन्न किया था। जब बलि ने समस्त देवताओं को पराजित कर दिया तब अग्नि देवता स्वयं विष्णु भगवान् की सेवा में उपस्थित हुए थे।

- **अग्निवर्ण:** 'अग्नि इव वर्णः यस्य सः' अर्थात् जिसका वर्ण (रंग) अग्नि के समान तेजस्वी हो वह अग्निवर्ण है। वाल्मीकि रामायण में अग्निवर्ण एक इक्ष्वाकुवंशीय राजा थे। इनके पिता का नाम सुदर्शन था। लाक्षणिक दृष्टि से यह एक यौगिक पद है।

- **अङ्गदीया:** 'अङ्गदस्य कृते निवेशिता या सा अङ्गदीया'[xv] अर्थात् जो नगरी अङ्गद के लिए बनायी गई है, वह अङ्गदीया है। यह 'कारुपथ' नामक प्रदेश की राजधानी का नाम था, इसे श्रीराम ने लक्ष्मण-पुत्र अङ्गद के लिए बसाया था, इसलिए इसका नाम अङ्गदीया था। यह भी एक यौगिक पद है।

- **अजामुखी:** 'अजा मुखमिव मुखं यस्याः सा' अर्थात् बकरी के मुख के समान मुख है जिसका। अजामुखी रावण की अशोक वाटिका में रहने वाली एक राक्षसी का नाम है। सम्भवतः यह राक्षसी क्रूर एवं कुरूप रही होगी, इसलिए इसका नाम अजामुखी था। यह भी एक यौगिक पद है।

- **अञ्जन:** 'अनक्ति प्रतीच्या दिशि रक्षकत्वेन प्रकाशते'[xvi] अर्थात् जो पश्चिम दिशा को प्रकट करता है या प्रकाशित करता है। यह पश्चिम दिशा को प्रकाशित करने वाले

एक हाथी का नाम है। यह पद अञ्ज् धातु से 'ल्युट्' प्रत्यय करके निष्पन्न हुआ है।

- **अञ्जलिक:** 'अञ्जलि' शब्द से 'क' प्रत्यय के योग से 'अञ्जलिक' पद बना है। वाल्मीकि रामायण में यह पद 'बाण' के लिए प्रयुक्त हुआ है। जिसका मुख भाग दोनों हाथों की अञ्जलि के समान हो, वह बाण 'अञ्जलिक' कहा गया है। इस प्रकार यह एक यौगिक पद है।

- **अतिबल:** 'अतिशयितं बलं यस्य स अतिबलम्' अर्थात् जो अत्यधिक बलवान है। वाल्मीकि रामायण में यह एक तेजस्वी तथा बलवान् महर्षि का नाम है, जिसने साक्षात् काल को दूत बनाकर श्रीराम के पास भेजा था। जो ऋषि या महर्षि काल को दूत बनाकर श्री राम के पास भेज सकता है, वह अत्यधिक बलशाली तो रहा ही होगा। अतः यह भी एक यौगिक पद है।

- **अत्रि:** अद् भक्षणे धातु से 'त्रिन्' प्रत्ययोपरान्त 'अत्रि' पद निष्पन्न हुआ है। वाल्मीकि रामायण में यह पद एक ऋषि के लिए प्रयुक्त हुआ है[xvii]। वैदिक साहित्य में अत्रि को वाक् भी कहा गया है तथा ज्ञानादि का भक्षण करने वाला या आत्मसात् करने वाला बताया गया है। उणादिकोश में अत्रि पद की निरुक्ति इस प्रकार है जिसने एक ही घूट में सारा गंगाजल पी लिया हो, वह अत्रि है। वैदिक शब्दकोश का निर्वचन है- 'सुखानामत्ता भोक्ता स अत्रि'। इन निर्वचनों के अध्ययन से स्पष्ट है कि अत्रि एक यौगिक पद है।

- **अदिति:** 'दो अवखण्डने' धातु से 'क्तिन्' प्रत्यय करके नञ् समास में अदिति पद बना है, इसकी निरुक्ति है- 'दात्तुं छेत्तुम् अयोग्या इति अदिति' अर्थात् जो विनाश रहित हो। यह एक यौगिक पद है। यह देवताओं की माता के नाम के रूप में वाल्मीकि रामायण में प्रयुक्त हुआ है।

- **अमरावती:** 'अमराः विद्यन्ते यत्र' निरुक्ति के अनुसार अमर शब्द से 'मतुप्' एवं स्त्रीप्रत्यय लगाकर अमरावती पद बना है। वाल्मीकि रामायण में यह इन्द्र की राजधानी का नाम है। इसमें सभी देवता निवास करते थे। वे सब अमर थे इसलिए इसका नाम अमरावती था। अतः यह एक यौगिक पद है।

- **अरिष्टनेमि:** अरिष्टनेमि विवस्वान् के पश्चात् सोलहवें प्रजापति का नाम था। यह राजा सगर की छोटी रानी सुमति के पिता थे। यह पद अरिष्ट तथा नेमि पदों के योग से बना है। वाल्मीकि रामायण में कश्यप ऋषि के विशेषण के लिए भी अरिष्टनेमि शब्द का प्रयोग हुआ है।

- **कन्दर्प:** 'कं सुखं तेन तत्र वा दृप्यति' अथवा 'कं कुत्सितो दर्पः यस्मात्' यह पद कम् पूर्वक 'दृप् हर्ष मोहनयोः' धातु से 'अच्' प्रत्यय करके निष्पन्न हुआ है। इसका अर्थ है- कामदेव। वाल्मीकि रामायण में भी यह पद कामदेव के लिए ही प्रयुक्त हुआ है[xviii]। इस दृष्टि से यह यौगिक पद है।

- **कपिल:** कमु कान्तौ धातु से 'इलच्' प्रत्ययोपरान्त यह पद निष्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है पिङ्गल वर्ण, भूरा या बादामी। वाल्मीकि रामायण में कपिल एक महर्षि का नाम है, जिन्होंने क्रुध होकर राजा सगर के साठ हजार पुत्रों को भस्म कर डाला था। सम्भवतया इन ऋषि का वर्ण भूरा या पिङ्गल हो, इसलिए इनको कपिल कहा जाता हो। इस दृष्टि से यह यौगिक पद है।

- **कबन्ध:** वाल्मीकि रामायण के अनुसार यह एक राक्षस का नाम है, जिसको राम ने मार दिया था। यह एक मस्तक एवं ग्रीवा रहित विशालकाय राक्षस था। 'कं मुखं बध्नाति' अथवा 'केन प्राण वायुना जीवतो नरस्येव क्रियाकारित्वशक्तित्वात् तथात्वम्' अर्थात् सिर रहित वह धड़ जिसमें प्राण शेष हों। इन निरुक्तियों के आधार पर यह एक यौगिक पद क्योंकि यह राक्षस भी सिर रहित धड़ वाला था। वाल्मीकि रामायण में बिना मस्तक वाली लाशों के लिए भी प्रयुक्त हुआ है। इस प्रकार यह यौगिक पद है।

- **कामधेनु:** यह एक स्वर्ग की गाय का नाम है, जो कामनाओं को पूर्ति करने वाली मानी जाती है, इसलिए इसे कामधेनु कहा जाता है। वाल्मीकि रामायण में भी यह पद इसी गाय के लिए प्रयुक्त हुआ है। यह एक यौगिक पद है।

- **कुम्भकर्ण:** 'कुम्भ इव कर्णौ यस्य स कुम्भकर्णः' अर्थात् कुम्भ (घड़े) के समान कान है जिसके, वह कुम्भकर्ण है। वाल्मीकि रामायण में कुम्भकर्ण रावण के भाई का नाम है। इस राक्षस का विशाल शरीर पर्वत के समान था।

यह एक वर्ष में छः महीने सोता रहता था[xix]। वाल्मीकि रामायण में इनके परिचय में भी इनको 'बृहत्कर्णः कुम्भकर्णः'[xx] कहा है। अतः स्पष्ट है कि इनका शरीर अत्यन्त विशाल तथा तथा कान भी अत्यधिक विस्तृत कुम्भ के समान थे, इसलिए इनको कुम्भकर्ण कहा जाता था। यह भी एक यौगिक पद है।

- **कृतयुगः** चार प्रकार के काल (युग) माने गए है सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग एवं कलियुग। इनमें से सत्ययुग को कृतयुग भी कहा जाता है। वाल्मीकि रामायण में भी यह पद सत्ययुग के लिए ही आया है[xxi]। कृतयुग पद की निरुक्ति इस प्रकार की जा सकती है 'क्रियते सत्यमेवानुष्ठीयतेऽस्मिन्' अथवा 'क्रियते सत्ये स्थाप्यते लोको यत्र' अर्थात् जिस युग में सत्य की अधिकता हो उसे कृतयुग कहा जाता है। यह भी एक यौगिक पद है।

- **त्रिशूलः** 'त्रीणि शूलानि इव अग्राणि यस्य' अर्थात् तीन शूलों वाला अग्रभाग है जिसका। वाल्मीकि रामायण में यह एक अस्त्र- विशेष का नाम है। इसके अग्रभाग में तीन शूल होते हैं। यह भी एक यौगिक पद है।

- **दक्षः** 'दक्षते सृष्टि प्रवृद्धये समर्थो भवतीति दक्ष' अर्थात् जो सृष्टि की वृद्धि में समर्थ हो वह दक्ष है, वाल्मीकि रामायण में यह एक प्रजापति का नाम है, उसकी जया तथा सुप्रभा नामक दो सुन्दर कन्याएँ थी। यह एक यौगिक पद है क्योंकि प्रजापति के माध्यम से ही सृष्टि आगे बढ़ती है।

- **दण्डक (अरण्य):** वाल्मीकि रामायण में यह एक वन का नाम है। वनवास के समय श्री राम ने इस अरण्य में निवास किया था। यह विन्ध्य तथा शैवल पर्वतों के मध्य में स्थित था। यहाँ पर राजा दण्ड का शासन था। अपने धर्म विरुद्ध आचरण के कारण राजा दण्ड शुक्राचार्य के शाप से नष्ट हो गए थे। इस स्थान पर राजा दण्ड का शासन था इसलिए इसे 'दण्डकारण्य' के नाम से जाना जाता था, अतः स्पष्ट है कि यह यौगिक पद है।

शप्तो ब्रह्मर्षिणा तेन वैधर्म्यं सहिते कृते।
ततः प्रभृति काकुत्स्थ दण्डकारण्यमुच्यते॥

- **दशरथः** 'दशसु दिक्षु गतो रथो यस्य' अर्थात् जिसका रथ दशों दिशाओं में घूमता हो। वाल्मीकि रामायण में यह राम के पिता तथा अयोध्या के राजा का नाम है। वे अत्यन्त धार्मिक तथा सत्यप्रतिज्ञ थे।

इक्ष्वाकूणां कुले जातो भविष्यति सुधार्मिकः।
नाम्ना दशरथो राजा श्रीमान्सत्यप्रतिश्रवः॥ [xxii]

यह अत्यन्त बलशाली राजा थे युद्ध में विजय प्राप्त करते हुए इनका रथ दशों दिशाओं में घूमता रहता था। सम्भवतः इसलिए इन्हें दशरथ कहा जाता हो इस दृष्टि से यह यौगिक पद है।

- **दुर्वासाः** 'दुर्दुष्ट निगूढमित्यर्थः वास इव धर्मावरणत्वं यस्य'[xxiii]। वाल्मीकि रामायण में यह एक ऋषि का नाम है जिसने राम के दुःखमय जीवन की भविष्यवाणी की थी। यह भी एक यौगिक पद है।

- **दूषणः** यह जनस्थान के एक राक्षस का नाम है, जिसका राम ने वध कर दिया था[xxiv]। 'दुष्'[xxv] (दूषित करना) धातु से 'णिच्' एवं 'ल्यु' प्रत्यय करने के पश्चात् 'दूषण' पद निष्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है दूषित करना अथवा अपकीर्ति। राक्षसों के कार्यानुरूप 'दूषण' पद का अर्थ इस जनस्थानी राक्षस के लिए उपयुक्त है। यथा नाम तथा गुण के अनुसार इस पद को यौगिक पदों की श्रेणी में रखा जा सकता है।

- **धन्वन्तरिः** ये आयुर्वेदमय धर्मात्मा पुरुष क्षीर सागर से मन्थन के समय उत्पन्न हुए थे। इनके एक हाथ में दण्ड तथा दूसरे में कमण्डलु था। इस पद की व्युत्पत्ति है- 'धनुरूपलक्षत्वात् शल्यादिचिकित्साशास्त्रं तस्य अन्तं ऋच्छति' अर्थात् देवताओं के चिकित्सक का नाम धन्वन्तरि था। वाल्मीकि रामायण में भी 'आयुर्वेदमयः पुमान्' कहा है। इस प्रकार स्पष्ट है कि यह भी एक यौगिक पद है।

- **मरीचिः** यह ब्रह्मा के पुत्र तथा कश्यप के पिता का नाम है। इस पद की निरुक्ति है- 'म्रियते नश्यति पापराशिर्यस्मिन्निति' अर्थात् जिसमें पाप नष्ट हो। मरीचि ब्रह्मा के पुत्र थे तो स्वाभाविक है कि वे पापरहित होंगे। इस दृष्टि से यह यौगिक पद है। संस्कृत साहित्य में सूर्य की किरणों को भी मरीचि कहते हैं 'म्रियन्ते नश्यन्ति क्षुद्रजन्तवः तमांसि वा अनेनेति मरीचिः' अर्थात् वह जिससे अल्पप्राणी या अन्धेरा नष्ट हो जाता हो। सूर्य की किरणों के लिए प्रयुक्त मरीचि पद पद भी यौगिक ही है।

- **मैनाक:** वाल्मीकि रामायण में यह एक पर्वत का नाम है। वानर राज सुग्रीव वानरों को इस पर्वत पर सीता के अन्वेषण के लिए भेजते हैं। इस पद की निरुक्ति है 'मेनायाः अपत्यं पुमान्' अर्थात् मेना तथा हिमालय से उत्पन्न पर्वत विशेष। वाल्मीकि रामायण में तो निर्वचन पर आधारित कोई संकेत या वर्णन प्राप्त नहीं होता तथापि यह पद यौगिक है।

- **रावण:** सत्य युग में ब्रह्मा जी के प्रभावशाली एवं तेजस्वी पुत्र पुलस्त्य हुए[xxvi]। उन्होंने राजर्षि तृणबिन्दु की पुत्री से विश्रवा को उत्पन्न किया। विश्रवा मुनि एवं राक्षसराज सुमाली की पुत्री कैकसी से रावण उत्पन्न हुआ। कैकसी अपने पिता सुमाली के कहने पर विश्रवा की सेवा में उस समय उपस्थित हुई थी जब वे सायंकाल का अग्निहोत्र कर रहे थे। सर्वज्ञ विश्रवा ने कैकसी से कहा कि तुम दारुणवेला में मेरे सम्मुख उपस्थित हुए हो इसलिए तुम क्रूर स्वभाव वाले राक्षस पुत्रों को जन्म दोगी -

दारुणान् दारुणाकारान् दारुणाभिजनप्रियान्।
प्रसविष्यसि सुश्रोणि राक्षसान् क्रूर कर्मणः।। [xxvii]

'रु' शब्दे धातु से 'णिच्' एवं 'ल्यु' प्रत्यय करके रावण पद बना है। इसकी निरुक्ति है – 'रावयति भीषयति सर्वान्' अर्थात् डराने वाला या हाहाकार करने वाला। वाल्मीकि रामायण में भी रावण पद की निरुक्ति की गई है –

शैलाक्रान्तेन यो मुक्तत्वया रावः सुदारुणः।
यस्माल्लोकत्रयं चैतद् रावितं भयमागतम्॥
तस्मात्त्वं रावणो नाम नाम्ना राजन् भविष्यति।
देवता मानुषा यज्ञा ये चान्या जगतीतले।
एवं त्वामभिधास्यन्ति रावणं लोक रावणम्॥[xxviii]

एक बार क्रोधाविष्ट होकर रावण ने शंकर के क्रीडास्थल रूप पर्वत को उखाड़ फैंकना चाहा। भगवान् शंकर ने उसे अपने पैर के अंगूठे से दबाया, तो उसकी भुजाएँ दब गई वह रोने लगा तथा वह भारी नाद (राव) तीनों लोकों में व्याप्त हो गया। ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे तीनों लोक रुला दिये गए हो या भयभीत कर दिये गए हो फिर रावण ने क्रुद्ध हुए भगवान् शंकर की स्तुति की, जिससे प्रसन्न होकर शंकर ने उसका नाम रावण रखा। इसके अतिरिक्त वाल्मीकि रामायण में 'रावणः शत्रु रावणः' एवं 'रावणं रिपु रावणम्' अर्थात् शत्रुओं को रूलाने वाला या आक्रान्त करने वाला का भी प्रयोग हुआ है। इस प्रकार इस सम्पूर्ण विवरण से स्पष्ट है कि यह एक यौगिक पद है।

- **राहु:** वाल्मीकि रामायण में यह एक ग्रह का नाम है, जो सूर्य और चन्द्रमा को समय-समय पर ग्रसित करता है। यह पद 'रह्'[xxix] धातु से औणादिक 'उण्' प्रत्यय के बाद निष्पन्न हुआ है। इसकी निरुक्ति है 'रहति चन्द्रर्कौ त्यजतीति राहुः' अर्थात् वह जो सूर्य तथा चन्द्रमा को ग्रसित करके पुनः छोड़ता है। अतः स्पष्ट है कि यह भी एक यौगिक पद है।

- **विद्युकेश:** 'विद्युदिव दीप्ति शालिनः केशा यस्य' अर्थात् विद्युत् के सदृश चमकीले केश हैं जिसके, वह विद्युत्केश है। वाल्मीकि रामायण में यह राक्षसराज हेति तथा भया के पुत्र का नाम है, जो सूर्य के समान तेजस्वी एवं प्रकाशित था[xxx]। रामायण में इस राक्षस को सूर्य के समान तेजस्वी बताया गया है। सम्भवतः अपने दीप्यमान केशों के कारण यह प्रकाशित होता हो। इस दृष्टि से विश्लेषण करने पर यह भी एक यौगिक पद है।

- **विद्युदंष्ट्र:** वाल्मीकि रामायण में यह एक वानर प्रमुख का नाम है[xxxi]। इस पद का अर्थ है- बिजली के समान चमकीली दाढ़ या दांत है जिसके, वह विद्युदंष्ट्र है। सम्भवतः यह वानर ऐसा रहा हो इस दृष्टि से सादृश्य के आधार पर यह यौगिक पद है।

- **विभीषण:** वाल्मीकि रामायण में यह राक्षसराज रावण के भाई का नाम है[xxxii]। विभीषण बाल्यकाल से ही धर्मात्मा थे तथा सदैव धर्म में स्थित रहते थे। 'विभीषणस्तु धर्मात्मा नित्यं धर्मे व्यवस्थितः'[xxxiii]। ब्रह्मा से वरदान के रूप में भी इन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी धर्म सम्मत बुद्धि की ही प्रार्थना की थी- 'परमापद्गतस्यापि धर्मे मम मतिर्भवेत्'[xxxiv]। इनकी पत्नी का नाम सरमा था तथा वह भी धर्मतत्त्व को जानने वाली थी। यह पद वि पूर्वक 'भी'[xxxv] धातु से 'षुक्' एवं 'ल्यु' प्रत्यय करके बना है जिसका अर्थ है भयानक या डरावना। इस पद की एक निरुक्ति यह भी हो सकती है 'विगता भीषणता यस्मात्' अथवा 'विशेषेण भीषणः' अर्थात् जो विशेष रूप से भयंकर है, किन्तु इस राक्षस के स्वभाव को देखते हुए यहाँ प्रथम निरुक्ति ही समीचीन प्रतीत होती है क्योंकि वे इतने धार्मिक थे कि

उनके अन्दर से राक्षस के स्वभाव वाली भयानकता निकल गई थी। इस दृष्टि से यह यौगिक पद है।

- **विशल्यकरणी:** 'विशल्यं तत्प्रहारजन्यवेदनादि नाशं करोतीति' अर्थात् औषधी विशेष[xxxvi]। वाल्मीकि रामायण में यह भी एक औषधी का नाम है[xxxvii]। यह शरीर में धँसे बाणादि निकालकर घाव भरने एवं पीड़ा दूर करने वाली औषधी है[xxxviii]। अतः स्पष्ट है कि यह एक यौगिक पद है।

इस प्रकार वाल्मीकि रामायण में अनेक यौगिक पदों का निरूपण है जिनमें से कुछ का संक्षेप में परिचय यहाँ दिया गया है। इन पदों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि उस समय अधिकतर नाम 'यथा गुण तथा नाम' के आधार पर तथा योग्यता अनुसार रखे जाते थे। यथा लंकापति रावण की पत्नी अत्यंत रूपवती थी तो उसका नाम मंदोदरी रख दिया। इसी प्रकार भयंकर रक्षसियों के नाम अजामुखी, तड़का, शूर्पणखा आदि होते थे तथा सुंदरी अप्सराओं के उर्वशी, मेनका इत्यादि नाम होते थे। इस प्रकार के अध्ययनों से ज्ञात होता है कि वाल्मीकि रामायण का महत्त्व न केवल लौकिक साहित्य के आदिकाव्य के रूप में है अपितु इसने भाषा को संवर्धित करने में भी अपूर्व योगदान दिया है।

सन्दर्भसूची :

1. वाल्मीकि रामायण- गोविन्द भवन, गीताप्रेस गोरखपुर
2. रामायणम्- तिलक-भूषण-शिरोमणि टीकात्रयेणोपस्कृतम्, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2002
3. श्रीमद्वाल्मीसकिरामायणम्- पण्डित अखिलानन्द झरिया, रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़ (सोनीपत), 1999 ई.
4. उणादिकोष- स्वामी दयानन्द सरस्वती, युधिष्ठिर मीमांसक, रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़ (सोनीपत), 1974 ई.
5. अष्टाध्यायी- ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़ (सोनीपत), 2010 ई.
6. निरुक्त- चन्द्रमणि विद्यालङ्कार, आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला, सम्वत् 2033 वि.
7. पाणिनीयशब्दानुशासनम्- सत्यानन्दवेदवागीशः, 2013 ई.
8. महाभाष्य (हिन्दी व्याख्या सहित)- सुद्युम्न आचार्य (सम्पादक), रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़ (सोनीपत), २००८.
9. न्यायसिद्धान्त मुक्तावली- श्रीकृष्णवल्लभाचार्य, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी
10. साहित्यदर्पण- डॉ०सत्यव्रत सिंह, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2015
11. वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्ड)- डॉ०शिवशङ्कर अवस्थी, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2016
12. अमरकोशः (क्षीरस्वामिकृत-अमरकोषोद्घाटन व्याख्योपेत), श्री कृष्णजी गोविन्द ओक, उपासना प्रकाशन, कमला नगर, दिल्ली, 1981.
13. शब्दकल्पद्रुम- राजा राधाकान्तदेव बहादुर, तृतीय संस्करण, चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी, 1967
14. हलायुधकोश- जयशङ्कर जोशी, द्वितीय संस्करण, हिन्दी समिति, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, 1967
15. संस्कृत-हिंदी-कोष-आप्टे वामन शिवराम, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1973
16. संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ- चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा एवं पण्डित तारणीश झा, रामनारानण लाल बेनी प्रसाद प्रकाशक, इलाहाबाद, १९७१
17. संस्कृत साहित्य का इतिहास- बी. वरदाचार्य, एम.ए., रामनारायण लाल, इलाहाबाद
18. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास- डॉ० कपिलदेव द्विवेदी

---

[i] वाल्मीकिरामायण, १.१.९८

[ii] व्याकरण महाभाष्य, पस्पशाह्निक

[iii] व्याकरण महाभाष्य, पञ्चमाह्निक

[iv] न्यायसिद्धान्तमुक्तावली, शब्दखण्ड, पृ. १

[v] साहित्यदर्पण, २/१९

[vi] वाक्यपदीयम्, ३१

[vii] तच्चतुर्विधम् - क्वचिद्यौगिकं क्वचिद्रूढं क्वचिद्योगरूढं क्वचिद् यौगिकरूढम्, न्यायसिद्धान्त मुक्तावली, शब्दखण्ड, पृ. ३०

[viii] यद् गृहीतमविज्ञातं निगदेनैव शब्द्यते। अनग्नाविव शुष्केन्धौ न तज्ज्वलति कर्हिचित्। निरुक्त १/६

[ix] वाक्यपदीयम्- १/१

[x] तेन निवृत्तम्, अष्टाध्यायी, ४.२.६८

[xi] संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ

[xii] वाल्मीकिरामायण, १.७.३

[xiii] उणादिकोश

[xiv] हलायुधकोश

[xv] वाल्मीकिरामायण, ७.१०२.८

xvi हलायुधकोश

xvii वाल्मीकिरामायण, ७.१०३.१

xviii वाल्मीकिरामायण, ७.२३.१०

xix वाल्मीकिरामायण, ६.६१.१२

xx वाल्मीकिरामायण, ६.६५.२८

xxi वाल्मीकिरामायण, ६.६१.३

xxii वाल्मीकिरामायण, १.११.२

xxiii शब्दकल्पद्रुम

xxiv वाल्मीकि रामायण १.१.४७

xxv दुष् वैकृत्ये, धातुपाठ, दिवादिगण

xxvi वाल्मीकि रामायण ७.२.४

xxvii वही, ९.२३

xxviii वाल्मीकिरामायण, ७.१६.३६, ७.३७.३८

xxix रह् त्यागे, धातुपाठ, भ्वादिगण

xxx वाल्मीकिरामायण, ७.४.१७,१८

xxxi वाल्मीकिरामायण, ६.७३.६३

xxxii वाल्मीकिरामायण, १.१.८५

xxxiii वाल्मीकिरामायण, ७.९.३९

xxxiv वाल्मीकिरामायण, ७.१०.३०

xxxv ञिभी भये, धातुपाठ, जुहोत्यादिगण

xxxvi शब्दकल्पद्रुम

xxxvii वाल्मीकिरामायण, ६.१०१.३१

xxxviii वाल्मीकिरामायण, गीताप्रैस गोरखपुर, भाग २, पृ. ५७५